# हुसैन की अज़ादारी

## ज़ाकिरे शामे ग़रीबाँ मौलाना सै0 कल्बे हुसैन मुजतहिद

रसूल (स0) के बेकस नवासे मज़लूम हुसैन इब्ने अली इब्ने अबी तालिब (अ0) की शहादत को क़मरी महीनों के हिसाब से तेरह सौ तेरह बरस ख़त्म होने के क़रीब हैं। 61 हिजरी में यह दिलदोज़ शहादत कर्बला में हुई और अब 74 हिजरी ख़त्म की हदों तक आ चुका है, इस तेरह सौ बरस में कोई दौर ऐसा नज़र नहीं आता। जब मुहर्रम के महीने की शुरुआत हुई हो और हुसैन (अ0) के चाहने वालों के घरों में मातम की सफ न बिछ गई हो, शुरु–शुरु में तो इस ग़म को आलमगीर नहीं कहा जा सकता मगर अब तो यह कहना बड़ी बात नहीं है कि हर मुल्क, हर शहर, हर घर में हुसैन (अ0) का ग़म न सही तो हुसैन का ज़िक्र तो पहुँच ही चुका है। ज़िलहिज्जह की आख़री तारीख़ में इधर मग़रिब के किनारे पर मुहर्रम का चाँद ग़म का ख़ंजर बनकर चमका उधर उस मज़लूम की याद किसी न किसी सूरत में दिलों में ताज़ा हो गई, दोस्त अन्दाज़े ग़म और आँसुओं की रवानी में याद करते हैं और दुश्मन अज़ाए हुसैनी को रोकने की ग़र्ज़ से सही मगर याद ज़रूर कर लेते हैं बल्कि ख़ुदा का शुक्र है कि हमारा अज़ादारी का अन्दाज़ ही कुछ ऐसा है कि वह ग़ैर जो जिनको इस्लाम से कोई ताल्लुक़ नहीं, न वह हमारे रसूल को मानते हैं न हमारे इमामों पर उनका ईमान है, मगर वह भी हमारी मज्लिसों, हमारी सीना ज़नी, हमारी नौहाख़्वानी, हमारी ताज़ियादारी और रोने–धोने को देखकर हुसैन और उनके हैरतअंगेज़ कारनामों को ज़रूर जान लेते हैं।

इसमें कोई शक नहीं कि जिस तरह हुसैनियत के फिदाई हर लम्हा और हर घड़ी इसी फ़िक्र में रहते हैं कि अज़ाए हुसैनी मुख़तलिफ सूरतों से दुनिया में आम होती जाए, बढ़ती जाए घटने न पाए, उसी तरह हुसैन (अ0) के दुश्मन ज़बान से दुश्मनी का इज़हार न कर सकें, मगर अज़ादारी के हर जुज़ को बिदअत कहकर दुनिया से मिटा देने में उतनी ही कोशिश करते हैं जितनी हम बाक़ी रखने की कोशिश करते हैं। लेकिन ख़ुदा का शुक्र है कि शीआ बिलकुल पस्त क़ौम हों, मुफ़लिस हों, मुहताज हों, सियासत के मैदान में सबसे कमतर हो, हर दौर में पीछे रह जाते हों मगर अज़ाए हुसैन (अ0) के फैलाने और बढ़ाने में हमेशा कामियाब और हर मुख़ालेफत करने वाले पर ग़ालिब रहे और इन्शाअल्लाह ग़ालिब रहेंगे। यह इस वजह से नहीं कि हम ग़ालिब हैं, हम फिक्र वाले हैं, हम ख़ुश तदबीर हैं, जी नहीं बल्कि हमारा पक्का अक़ीदा है कि ख़ालिक़ की मर्ज़ी और चाहत यही है कि गमे हुसैनी, ज़िक्रे हुसैनी, वाक़ेआते शहादत दुनिया में फैलते रहें, बाक़ी रहें बल्कि बढ़ते रहें।

आज तो आप कह सकते हैं कि हम इस ग़म को फैला रहे हैं, बढ़ा रहे हैं। तमाम दुनिया को हुसैनियत की पहचान करा रहे हैं मगर इस शहादत के वाक़ेए से पहले आप थे या क़ुदरत थी जिसने हुसैन के तज़किरे छेड़–छेड़कर इस ग़म को आम कर दिया? इस्लामी इतिहास की बुनियाद और इन्सानियत की शुरुआत जिस ज़ात से हुई यानी जनाबे आदम (अ0) वहीं से अज़ाए हुसैन

(अ0) की बुनियाद पड़ी और जब कोई ज़िक्र करने वाला न था तो ख़ुद ज़बाने क़ुदरत ने मज्लिस पढ़ी और जिबरीले अमीन ने ज़ाकिरी शुरु की।

जनाबे आदम (अ0) अपने तर्के औला की सज़ा में जन्नत से निकले और तर्के औला के असर को मिटाने के लिए क़ुदरत ने कुछ बातों की तालीम दी कि उनके वसीले से तौबा करो तो क़बूल करूँ। वह बातें क्या थीं: मुहम्मद (स0), अली (अ0), फातिमा (स0), हसन (अ0), हुसैन (अ0)।

आदम (अ0) ने हर कलेमा अपनी ज़बान पर जारी किया मगर जब पाँचावां नाम लिया तो अपने आप रोए और क्यों न रोते। हुसैन (अ0) ने फरमाया है: ''जब भी कोई मोमिन मुझको याद करेगा तो ज़रूर रोएगा।'' आदम (अ0) के कामिल मोमिन होने में शक न था इसलिए हुसैने मज़लूम (अ0) की मुबारक ज़बान से निकली हुई हदीस आदम के आँसुओं की चमक में हक़ हो कर ज़ाहिर हुई और आदम ने जिबरईल से पूछा कि इसकी वजह क्या है कि किसी और नाम से मेरे दिल पर ग़म के असर पैदा न हुए मगर इस पाँचवें नाम ने रुला दिया। जिबरईल ने मज्लिस पढ़ना शुरु की। आदम ये तुम्हारा वह बेटा है जो लाचारी की हालत में भूखा, प्यासा बड़े ज़ुल्म व सितम के साथ क़त्ल किया जाएगा। न इसका कोई साथ देने वाला होगा और न कोई मदद करने वाला होगा, आदम काश तुम देख लेते कि यह मज़लूम किस तरह मदद की आवाज़ बुलन्द कर रहा होगा और इरशाद कर रहा होगा कि मेरा कोई मददगार अब बाक़ी नहीं है और प्यास से मेरा दिल भुना जाता है। आदम प्यास बढ़ते–बढ़ते इस मज़लूम और आसमान के दरमियान में धुएँ की तरह फैली हुई होगी और इसकी फरियाद के जवाब में कोई नैज़ा लगाता होगा और कोई तलवारें मारता होगा। यहाँ तक कि हुसैने मज़लूम को दुश्मन गर्दन से इस तरह ज़ब्ह कर देंगे जिस तरह गोस्फ़न्द को ज़िब्ह किया जाता है। इनका सामान लूट लेंगे और इनके घर वालों के साथ शहीदों के सर शहर–शहर में फिराएंगे। ऐ आदम ये वाक़ेआ ख़ुदा के इल्म में इसी तरह गुज़रा है।

आदम (अ0) और जिबरईल (अ0) इस तरह रोए जिस तरह वह औरत रोती है जिसका जवान बेटा मर गया हो, जन्नत से निकलने के बाद आदम (अ0) दूसरी जगह उतरे और हौव्वा (अ0) दूसरी जगह उतरीं। जनाब आदम (अ0) हौव्वा(अ0) की तलाश में हैरान व परेशान थे। चलते–चलते कर्बला की ज़मीन पर पहुँचे। इस ज़मीन पर क़दम रखते ही दिल भर आया और आँख से आँसू बह निकले यहाँ तक कि मक़तले इमाम में पहुँचकर ठोकर लगी और पैर से ख़ून जारी हुआ। ख़ुदा के दरबार में अर्ज़ की कि मेरे मालिक हर जगह से गुज़र गया मगर न तो कहीं मेरे दिल पर ग़म तारी हुआ और न ठोकर खाई। क्या मुझ से कोई गुनाह हुआ कि ठोकर लगी और ख़ून बहा। क़ुदरत ने जवाब दिया कि तुमसे न कोई ख़ता हुई न क़ुसूर हुआ, बल्कि यह वह जगह है जहाँ पर तुम्हारा बेटा हुसैन क़त्ल किया जाएगा। आदम शहादत के हालात सुन कर रोए और हुसैन (अ0) के क़ातिलों पर लानत करके आगे बढ़े।

इस मज्लिस में ज़ाकिर ख़ुद क़ुदरत थी और हाज़िरीने मज्लिस आदम व जिबरईल थे अज़ाब नाज़िल करने से पहले ख़ुदा ने जनाब नूह (अ0) को हुक्म दिया कि कश्ती बनाओ। नूह ने तख़्ते चीरे और कीलें जिबरईल लाये। सब कीलें लग चुकीं तो आख़िर में पाँच कीलें रह गईं। जिबरईल ने तालीम दी कि पहली कील मुहम्मद

(स0) का नाम लेकर कश्ती के सर पर लगा दो, दूसरी अली (अ0), तीसरी फातिमा (स0), चौथी हसन (अ0), पाँचवीं हुसैन (अ0) का नाम लेकर लगा दो। यह नाम आते ही इधर तो इस कील से नूर चमका और आँसू टपके और उधर नूह (अ0) ने कील से आँसू टपकने की वजह मालूम की। जिबरईल ने शहादत के वाक़ेआत बयान किये और नूह (अ0) का तो नाम ही ज़्यादा रोने और गिरया करने की वजह से नूह हुआ था इसलिए उनका रोना ताज्जुब वाली बात नहीं थी।

जनाबे नूह (अ0) ईमानदारों को लेकर कश्ती में सवार हुए और उठती हुई मौजों में बाक़ी इन्सानी ज़िन्दगी को अपने दिल में जगह देकर ख़ुदा के सहारे पर नूह (अ0) की कश्ती ने हर सरज़मीन पर घूमना शुरु किया। चलते–चलते कर्बला की तरफ आ गयी और एक मौज ने कश्ती को इतनी ज़बरदस्त तकान देना शुरु की कि जनाबे नूह (अ0) घबरा गए। दुआ के हाथ बुलन्द किये मेरे मालिक! हर ज़मीन से गुज़र गया मगर यह हालत कहीं न हुई, यह कौन सी ज़मीन है जहाँ कश्ती डूबी जा रही है। आवाज़ आई, नूह ये मेरे हुसैन मज़लूम के क़त्ल की जगह है। कुदरत की ज़बान ने वाक़ेआत बयान किये और नूह ने गिरया व बुका के साथ हुसैन (अ0) के क़ातिलों पर लानत की, तूफान से नजात पा गए।

जनाब इब्राहीम (अ0) ने अपने ख़याल में जनाब इस्माईल (अ0) को ज़िब्हा कर दिया। मगर जब आँख से पट्टी खोली देखा। इस्माईल तो सही वा सालिम हैं मगर दुम्बा ज़िब्ह हुआ। अल्लाह की बारगाह में अर्ज़ की कि मेरे ख़ालिक़ अगर मैं इस्माईल को ज़िब्ह करता और इस ग़म में मेरा दिल में जो दर्द होता तो जो मुझको सवाब मिलता उससे अब महरूम हो गया। ख़ुदा का इरशाद हुआ कि हुसैन (अ0) से तुमको ज़्यादा मुहब्बत है या इस्माईल से, अर्ज़ की हुसैन से। कुदरत ने जवाब दिया कि सुनो हुसैन मज़लूम पर यह जुल्म होंगे, यूँ क़त्ल होंगे, इब्राहीम (अ0) तुम हुसैन (अ0) के मसाएब सुनकर रो दिये तो तुम्हारा सवाब इससे बहुत ज़्यादा हो गया जो इस्माईल के ग़म में होता।

मुसलमान! कान खोल कर सुनें आँख खोल के देखें कि जनाबे इब्राहीम (अ0) फरमा रहे हैं कि मैं इस्माईल (अ0) को याद करके रोता तो मुझको सवाब मिलता। अब फरमाइये रोना बिदअत है या सवाब का काम? और फिर ज़िब्ह के बाद इस्माईल यक़ीनन ज़िन्दा–ए–जावेद होते तो अगर ज़िन्दा–ए–जावेद का मातम करना हराम था तो जनाब इब्राहीम के दिल की तमन्ना क्यों थी कि मैं रोता? सुन रखो कुर्आन हमारे रसूल (स0) से फरमाता हैः ''यह तो तुम्हारे बाप इब्राहीम (अ0) ही की मिल्लत है'' दूसरी जगह पर इरशाद होता है कि मिल्लते इब्राहीम से वही अलग हो सकता है जो अपने आपको बेवकूफ बनाए। तो जो मिल्लते इब्राहीम से अलग नहीं हुए हैं वह हुसैन (अ0) को ज़िन्दा–ए–जावेद समझने के बाद भी रो रहे हैं और जो कुर्आन के इरशाद के हिसाब से बेवकूफ हैं वह जो मिल्लते इब्राहीम से मुँह फेरे, जिन्दा–ए–जावेद के मातम को हराम और बिदअत बता रहे हैं। जनाबे इब्राहीम (अ0) घोड़े पर सवार हैं और कर्बला की ज़मीन पर गुज़र हुआ। घोड़े ने ठोकर ली और जनाब इब्राहीम गिरे, सरे मुबारक से ख़ून जारी हुआ। ख़ुदा से अर्ज़ की, मेरे मालिक कोई कुसूर हुआ? इरशाद हुआ नहीं। मगर यह वह जगह है जहाँ तुम्हारे बेटे हुसैन (अ0) का ख़ून बहेगा। तुम्हारा ख़ून ख़ूने हुसैन में मिलना चाहता है। यहाँ पर कुदरत की ज़बान ने मसाएब

की मज्लिस पढ़ी और जनाब इब्राहीम रोए।

जो शख़्स जनाब इस्माईल की दुम्बियाँ चराता था उसने आकर अर्ज़ की कि यह दुम्बियाँ इस नहर से पानी नहीं पीतीं। जनाब इस्माईल ने ख़ुदा की बारगाह में सवाल किया। जवाब मिला कि उन्हीं दुम्बियों से पूछो। दुम्बियों ने अर्ज़ किया कि ऐ ख़ुदा के नबी! यह वह नहर है जिसके किनारे आपका बेटा हुसैन प्यासा ज़ब्ह होगा। हम इस नहर से पानी नहीं पी सकते।

वादे के सच्चे जनाबे इस्माईल (अ0) पर उम्मत ने हज़ारों ज़ुल्म किये। यहाँ तक कि उनके जिस्म की खाल खींच ली। फरिश्ता नाज़िल हुआ कि तुम इजाज़त दो तो मैं इनसे तुम्हारा बदला ले लूँ। जनाब इस्माईल ने जवाब दिया कि नहीं मैं बदला नहीं चाहता मैं तो हुसैन इब्ने अली (अ0) की पैरवी करूँगा और हर ज़ुल्म पर सब्र करूँगा। मालूम होता है क़ुदरत इनसे भी शहादत के वाक़ेआत बयान कर चुकी थी।

हज़रत मूसा (अ0) मुनाजात के लिए जा रहे हैं और एक शख़्स ने रास्ता रोक कर अर्ज़ की कि ख़ुदा के नबी मुझ से एक गुनाह हो गया है, ख़ुदा से सिफारिश फरमाइयेगा कि मुआफ़ कर दे। जनाबे मूसा (अ0) ने मुनाजात शुरु की, आवाज़ आई। मूसा क्या चाहते हो? अर्ज़ की तू ख़ूब जानता है इस शख़्स का गुनाह मुआफ़ कर दे। जवाब मिला कि मूसा (अ0) जो सच्चे दिल से मुझ से तौबा करेगा उसे मुआफ़ कर दूँगा, मगर हुसैन के क़ातिलों को न मुआफ़ करूँगा। जनाब मूसा (अ0) ने पूछा और ख़ुदा ने शहादत के वाक़ेआत बयान किये। जनाबे मूसा (अ0) शिद्दत के साथ रोये।

सुलेमान (अ0) का तख़्त हवा पर है कि कर्बला की ज़मीन आ गई। तख़्त ने तीन चक्कर खाए और कर्बला की ज़मीन पर उतर गया। जनाबे सुलेमान (अ0) ने हवा से पूछा कि इस ज़मीन पर क्यों रुक गई, जवाब मिला कि यह हुसैने मज़लूम के क़त्ल की जगह है। जब तक हुसैन (अ0) के क़ातिल पर लानत न करोगे तख़्त आगे नहीं बढ़ सकता। जनाबे सुलेमान (अ0) ने शहादत के हालात सुने, हुसैन (अ0) के क़ातिलों पर लानत की, उस वक़्त तख़्त आगे बढ़ा।

जनाबे ज़करिया (अ0) को पंजतन के मुबारक नाम सिखाये गये। जब आप चार नाम लेते थे दिल ख़ुश हो जाता था। जब पाँचवाँ नाम लेते थे रोने लगते थे। सवाल किया, ख़ुदा के दरबार से जवाब मिला कि यह उस मज़लूम का नाम है जिसके मसाएब की हद न होगी। यह हालात सुनकर तीन दिन तक रोया ही किये।

हज़रत अब्बास (अ0) रसूल (स0) के चचा की बीवी उम्मुल फज़ल कहती हैं कि हुसैन रसूल की गोद में थे और रसूल ख़ूब आँसुओं से ज़ारो क़तार रो रहे थे मैंने पूछा, रसूल (स0) ने फरमाया यह मेरा बच्चा बड़े ज़ुल्म व सितम के बाद शहीद किया जायेगा।

अमीरुलमोमिनीन अली (अ0) सिफ्फीन की तरफ जाते हुए कर्बला की ज़मीन तक पहुँचे, सवारी से उतरे और फरमाया कि ''ऐ अबुअब्दिल्लाह हुसैन सब्र करना सब्र करना।'' अब्दिल्लाह इब्ने यह्या कहते हैं कि मैंने अर्ज़ की कि मौला। इस जुमले का क्या मतलब है? आपने फरमाया कि ऐ अब्दुल्लाह! एक दिन मैं रसूल (स0) की ख़िदमत में गया तो मैंने देखा कि आप बहुत शिद्दत से रो रहे हैं। मैंने अर्ज़ की कि ख़ुदा के रसूल (स0) आप क्यों रो रहे हैं? आपने इरशाद फरमाया कि ऐ अली! अभी जिबरईल आये थे और मुझको ख़बर दी कि मेरा हुसैन कर्बला की ज़मीन पर

क़त्ल होगा और उस ज़मीन की मिट्टी लाकर मुझे दिखाई।

सय्यिदा ज़िनाने आलम (स0) से पैग़म्बर ने फरमाया था कि जो बच्चा तुम्हारे पेट में है वह शहीद होगा इसलिए आप हमल के ज़माने में भी रोईं और पैदाईश के वक़्त भी रोईं।

जनाब सलमान फारसी (रज़ि0) फरमाते हैं कि कोई फरिश्ता आसमान पर ऐसा न था जिसने रसूल (स0) की ख़िदमत में आकर हुसैन के ग़म में ताज़ियत न अदा की हो।

इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) फरमाते हैं कि जब जिबरईल (अ0) ने इमाम हुसैन (अ0) की शहादत की ख़बर रसूल (स0) से बयान की तो रसूल ने यह ख़बर अली (अ0) से कह दी। दोनों भाई हुजरे में बैठकर देर तक रोया किये, यहाँ तक कि जिबरईले अमीन ने आकर अर्ज़ की कि ख़ुदा का इरशाद है कि बस अब सब्र कीजिये।

यह तमाम वाक़ेआत बताते हैं कि हुसैनका मातम इंसान की पैदाईश से जारी हुआ और बयान करने वाला ख़ुद ख़ुदा था और सुन्ने वाले नबी और रसूल थे तो अगर ख़ुदा की मर्ज़ी न थी कि हुसैन का ज़िक्र हमेशा ज़िन्दा रहे तो हर नबी से बयान करने की क्या वजह थी। ऐसे ज़िक्र को अगर कोई दुनिया से मिटाना चाहे तो याद रखे कि ख़ुद मिट जायेगा। दुनिया मिट जायेगी मगर हुसैन का ज़िक्र न मिटा है न मिटेगा।

यह भी ग़ौर कर लेने के क़ाबिल है कि जिस नबी ने यह ज़िक्र सुना वह रोया। तो अगर रोना बिदअत होता तो कभी तो वही होती कि मैं हुसैन की शहादत का ज़िक्र रोने के लिए नहीं करता, यह बिदअत है इस पर अमल न करना। फिर यह भी समझ लीजिये कि अब तो लोग एतेराज़ करते हैं कि ''हम ज़िन्द–ए–जावेद का मातम नहीं करते'' मगर नबी तो शहादत कैसी, पैदाईश से भी पहले रोये और ख़ासकर हमारे रसूल तो हुसैन को गोद मे बिठाकर रोए। अब फरमाइये कि जब रसूल की गोद में हुसैन मौजूद थे तो ज़िन्दा थे या ख़ुदा की पनाह शहादत हो चुकी थी तो किसी सहाबी ने क्यों न रोका कि अल्लाह के रसूल, हुसैन तो ज़िन्दा हैं आपकी गोद में हैं फिर यह रोना कैसा? इसलिए अगर इस ज़ाहिरी ज़िन्दगी में रसूल का रोना मसाएबे हुसैन सुनकर जायज़ था तो शहादत के बाद रोना भी न बिदअत है न हराम बल्कि बिलकुल जायज़ है, सीरते रसूल है, बेहद सवाब का काम है।

□□□